संस्कृतप्रचारपुस्तकमाला सं० ५०

हिन्दी-अंग्रेजी विद्यालयों में

संस्कृत शिक्षा की प्रगति तथा प्रचार

के लिये

कुछ उपयोगी सुझाव

•



•

सार्वभौम संस्कृत-प्रचार कार्यालय

वाराणसी ।

दो निवेदन

प्रस्तुत पुस्तिका में हिन्दी-अंग्रेजी के समस्त विद्यालयों (प्राइमरी स्कूलों से लेकर कालेजों तक) में संस्कृत शिक्षा की प्रगति एवं प्रचार के लिये कुछ उपयोगी सुझाव तथा कार्यक्रम प्रकाशित किये जा रहे हैं। साथ ही इन कार्यक्रमों को सम्पन्न करने में सहायता पहुँचाने की दृष्टि से कार्यालय द्वारा जो अनेक उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित की गयी हैं उनकी नामावली भी दी जा रही है। इस सम्बन्ध में हिन्दी-अंग्रेजी विद्यालयों के समस्त प्रधानाचार्यों तथा संस्कृताध्यापकों से निवेदन है कि वे इस पुस्तिका में उल्लिखित समस्त सुझावों एवं कार्यक्रमों को ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे तथा उचित प्रतीत होने पर उन्हें कार्य-रूप में परिणत करने की कृपा करेंगे।

एक और निवेदन है। कार्यालय द्वारा जो साहित्य प्रकाशित किया जा रहा है वह व्यापार की दृष्टि से नहीं प्रत्युत केवल संस्कृत भाषा के प्रचार की दृष्टि से। इस प्रकाशन का एकमात्र उद्देश्य संस्कृत भाषा को लोकसुलभ बनाना तथा समाज में सर्वत्र व्याप्त इस भय एवं आशंका को दूर करना ही हैं कि "संस्कृत भाषा एक अत्यन्त कठिन भाषा है, उसे कम समय में नहीं सीखा जा सकता तथा इसके द्वारा दैनिक व्यवहार चला सकना सर्वथा असंभव है।" अतः समस्त प्रधानाचार्यों, संस्कृताध्यापकों, संस्कृत के विद्यार्थियों तथा संस्कृतानु-रागी अन्य अध्यापकों से विनीत अभ्यर्थना है कि वे कार्यालय द्वारा प्रकाशित साहित्य को अधिकाधिक संख्या में मँगाकर उससे लाभ उठावें तथा अपनी इस कृपादृष्टि द्वारा कार्यालय को अनुगृहीत करें। कम से कम समस्त पुस्तकों की एक-एक प्रति तो प्रत्येक विद्यालय में अनिवार्य रूप से रहनी ही चाहिये।

मुझे विश्वास है, उपर्युक्त निवेदनों पर ध्यान देते हुए हिन्दी-अंग्रेजी के समस्त विद्यालय अपने-अपने यहाँ संस्कृतशिक्षा की अधिकाधिक प्रगति एवं प्रचार के लिए प्रयत्नशील होंगे तथा कार्यालय को भी अपनी सेवा करने का अवसर प्रदानकर उपकृत एवं उत्साहित करेंगे ।

संस्कृत दिवस—
२६ अगस्त १९८०
वाराणसी ।

विनीत
बासुदेव द्विवेदी शास्त्री
(संचालक)



१. अभिरुचि-उत्पादन

हिन्दी-अंग्रेजी विद्यालयों के लिए संस्कृत प्रसार की दृष्टि से जो सबसे अधिक आवश्यक काम है वह है विद्यार्थियों के हृदय में संस्कृत भाषा एवं साहित्य के अध्ययन के प्रति विशेष अभिरुचि उत्पन्न करना। शिक्षा विभाग द्वारा संस्कृत को कुछ श्रेणी तक अनिवार्य तथा कुछ श्रेणी तक ऐच्छिक रूप में स्थान मिल जाने पर भी विद्यार्थियों में संस्कृत के प्रति श्रद्धा, हार्दिक अभिरुचि और प्रेम दृष्टिगोचर नहीं होता। इसीलिए वे संस्कृत पढ़ते तो अवश्य हैं पर उसमें योग्य बनने का प्रयत्न नहीं करते। ऐसी स्थिति में संस्कृत अध्यापकों का यह सर्वप्रथम कर्तव्य होना चाहिये कि वे समय-समय पर संस्कृत भाषा एवं साहित्य की महत्ता तथा उसके पठन-पाठन की उपयोगिता के सम्बन्ध में पाण्डित्यपूर्ण, अकाट्य प्रमाणों एवं युक्तियों से संवलित तथा प्रभावोत्पादक भाषण दिया करें एवं विद्यार्थियों के हृदयपटल पर संस्कृत के महत्त्व की एक बार अमिट छाप डाल देने का प्रयत्न करें। हिन्दू विद्यार्थियों के अतिरिक्त जो मुसलमान या ईसाई विद्यार्थी संस्कृत पढ़ते हों उन्हें भी मुसलमान तथा ईसाई विद्वानों के संस्कृत-महत्त्व-विषयक लेखों तथा व्याख्यानों का उद्धरण देते हुए संस्कृत का महत्त्व समझाना चाहिए तथा उन्हें इस ओर आकृष्ट करना चाहिए। अभिप्राय यह है कि संस्कृत अध्यापकों को विद्यार्थियों के हृदय में संस्कृत के प्रति ऐसा प्रगाढ़ प्रेम उत्पन्न कर देना चाहिए जिससे वे संस्कृत को श्रद्धा एवं सम्मान की दृष्टि से देखें, परिश्रमपूर्वक उसका अध्ययन करें तथा जीवनभर उसके सेवक तथा शुभचिन्तक बने रहें।

दुःख का विषय है कि अनेक संस्कृताध्यापक संस्कृत के सुयोग्य विद्वान् होते हुए भी संस्कृत की महत्ता से वास्तविक रूप में स्वयं अपरिचित होते हैं और वे दूसरों को संस्कृत का महत्त्व समझाने तथा इस ओर सबको आकृष्ट करने की शक्ति नहीं रखते। परन्तु यह किसी भी संस्कृताध्यापक के लिए अत्यन्त अशोभनीय एवं लज्जास्पद विषय है। अतः प्राइमरी स्कूल से लेकर कालेजों तक के समस्त संस्कृताध्यापकों को चाहिये कि वे अपनी इस त्रुटि को शीघ्र से शीघ्र दूर कर संस्कृत का महत्त्व स्वयं समझने तथा दूसरों को भी समझाने की शक्ति का अर्जन करें।

इस सम्बन्ध में संस्कृताध्यापकों की सहायता के लिये कार्यालय द्वारा पाँच पुस्तकें प्रकाशित की गयी हैं तथा तीन पुस्तकें प्रकाशित होनेवाली हैं। समस्त संस्कृताध्यापकों को इन पुस्तकों की एक एक प्रति अपने पास अवश्य रखनी चाहिए। पुस्तकें ये हैं—

१—संस्कृत शिक्षा के सम्बन्ध में देशके मूर्धन्य मनीषियों के विचार २-००

२—संस्कृत गौरवगानम् १-००

३—संस्कृत, क्यों पढ़ें, कैसे पढ़ें, क्या पढ़ें १-००

४—संस्कृत भाषण संग्रह २-००

५—संस्कृत और विदेशी विद्वान २-००

२. परिश्रमपूर्वक अध्यापन

संस्कृत प्रचार की दृष्टि से दूसरा परमावश्यक काम है विद्यार्थियों को समुचित रूप से परिश्रमपूर्वक पढ़ाना। हिन्दी अंग्रेजी विद्यालयों के संस्कृत-शिक्षण में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ देखने में आती हैं। अनेक अध्यापक विद्यार्थियों को परिश्रमपूर्वक पढ़ाना तथा उन्हें सुयोग्य बनाना अपना कर्तव्य नहीं समझते। जैसे विद्यार्थी अनिच्छापूर्वक केवल नम्बर पाने के लिये पढ़ते हैं वैसे ही अनेक अध्यापक केवल अर्थोपार्जन की दृष्टि से ही विद्यालय में आते हैं और अपनी घंटी पूरी करके चले जाते हैं। कुछ अध्यापक अनावश्वक बाहरी बातों में, कुछ रोब-दाब जमाने में, कुछ हँसी-दिल्लगी करने में, कुछ ठाट-बाट बनाने में, कुछ अपनी पण्डिताई दिखाने में तथा कुछ तन्द्रा एवं तमाल-ताम्बूल-भक्षण करने में समय बिता दिया करते हैं। ऐसे अध्यापकों से कुछ विद्यार्थी प्रसन्न भी रहते हैं क्योंकि उन्हें अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ता। कुछ अध्यापक वस्तुतः अयोग्य भी होते हैं जो अपनी अयोग्यता छिपाने के लिए विविध आडम्बर रचा करते हैं। कुछ विद्यालयों में बहुत ही सुयोग्य अध्यापक दृष्टिगोचर होते हैं पर उनमें भी बहुत से अपनी योग्यता के मद में ही चूर रहा करते हैं। वे अपनी योग्यता का उपयोग प्रभाव जमाने में करते हैं, विद्यार्थियों को परिश्रम से पढ़ाने तथा उन्हें सुयोग्य बनाने में नहीं।

ये ही सब कारण हैं कि हिन्दी-अंग्रेजी विद्यालयों में संस्कृत पढ़नेवाले विद्यार्थियों की संख्या अधिक होने पर भी उनमें बहुत ही कम विद्यार्थी योग्य निकलते हैं। अतः इन दोषों को दूरकर विद्यालयों के प्रधानाचार्यों तथा संस्कृताध्यापकों को चाहिये कि वे संस्कृत भाषा की सेवा करने तथा विद्यार्थियों को योग्य बनाने की दृष्टि से उन्हें पूर्ण परिश्रम, मनोयोग, प्रेम, वात्सल्य तथा सरल एवं ज्ञानवर्द्धक शैली से शिक्षा देने का प्रयत्न करें जिससे वे विद्यार्थी भविष्य में संस्कृत के सुयोग्य विद्वान् बन सकें तथा संस्कृत के ज्ञान से व्यावहारिक जीवन में भी लाभान्वित हो सकें।

३. "हँसते-खेलते संस्कृत" पद्धति से बालकों को संस्कृत सिखाना

बालकों को मनोरंजन के साथ संस्कृत सिखाने के लिये इस कार्यालय द्वारा कुछ पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं जिन्हें बालक बड़े आनन्द के साथ पढ़ते हैं और हँसते-खेलते संस्कृत का आरंभिक ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। इन पुस्तकों के द्वारा अध्यापकों को भी संस्कृत सिखाने में कठिनाई नहीं होती। अत एव इस पद्धति का नाम "हँसते-खेलते संस्कृत" रखा गया है। प्रारंभिक कक्षाओं के अध्यापक यदि बालकों को संस्कृत सिखाने में इस पद्धति का उपयोग करें तो बालकों के संस्कृत ज्ञान में वृद्धि के साथ संस्कृत के प्रचार में भी बड़ी सहायता मिल सकती है। प्रकाशित पुस्तकें निम्नलिखित हैं —

१ – वर्णमाला गीतावलि (वर्णमाला के आधार पर १००० संस्कृत शब्दों का अर्थ के साथ लयबद्ध संग्रह] १–००

२—बाल शब्दकोश [तुकवन्दी के रूप में हिन्दी संस्कृत शब्दो का संग्रह] –५०

३—बाल संस्कृतम् [हिन्दी-संस्कृत वाक्यों का लयवद्ध संग्रह] –६०

४—बाल कवितावलि [हिन्दी संस्कृत मिश्रित कवितायें] –८०

५— ,, ,, [नये छन्दों में सरल संस्कृत कवितायें] १–००

४. व्यवहार में संस्कृत का उपयोग

संस्कृत के अध्यापकों तथा विद्यार्थियों को चाहिये कि वे कम-से-कम कक्षा में रहते समय यथाशक्ति संस्कृत में ही पठन-पाठन, साधारण प्रश्नोत्तर

तथा वार्तालाप आदि करने का प्रयत्न करें। इसका आरंभ पहले अध्यापकों को ही करना चाहिये क्योंकि विद्यार्थियों को अध्यापकों के साथ संस्कृत में एक साधारण वाक्य बोलने में भी संकोच होता है तथा अशुद्धि होने का बराबर भय बना रहता है। इसलिये विद्यार्थी प्रायः अपनी ओर से बोलने का साहस नहीं करते। अतः अध्यापकों को चाहिये कि पहले वे ही विद्यार्थियों के साथ सरल संस्कृत में बोलने का अभ्यास करें, संस्कृत में ही आज्ञायें दें तथा उन्हें भी संस्कृत में ही उत्तर देने तथा प्रश्न आदि करने के लिये प्रेरित करें।

कार्यालय द्वारा तीन ऐसी पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं जिनमें समस्त दैनिक व्यवहारोपयोगी संस्कृतवाक्य हिन्दी वाक्यों के साथ प्रकाशित कर दिये गये हैं। प्रत्येक अध्यापक और विद्यार्थी को चाहिये कि वह इन पुस्तकों को आद्योपान्त कण्ठस्थ कर ले और इनमें उल्लिखित वाक्यों का अवश्य प्रयोग करे। विद्यार्थियों के लिये तो ये पुस्तकें अवश्य ही विद्यालयों में अनिवार्य कर दी जानी चाहिये। पुस्तकें ये हैं—

१ — संस्कृत वाक्य संग्रह	०—४०
२—बाल संस्कृतम्	०—६०
३—संस्कृत संभाषणम्	१—२५
४—दैनिक व्यवहारोपयोगी संस्कृत वाक्यों के चार पोस्टर	१—००

अनेक स्कूल-कालेजों के संस्कृत के अध्यापक तथा प्रोफेसर अयोग्यता अथवा अनभ्यास के कारण संस्कृत में व्याख्यान देने अथवा उसका साधारण व्यवहार में प्रयोग करने से सर्वथा दूर रहा करते हैं। परन्तु उनके लिए यह अत्यन्त ही लज्जाजनक बात है और संस्कृत-प्रचार की दृष्टि से भी अवांछनीय है। अतः ऐसे समस्त अध्यापकों को चाहिए कि वे अपने पद की मर्यादा की रक्षा, संस्कृत-प्रचार तथा विद्यार्थियों के हित की दृष्टि से अपनी आयोग्यता को दूर कर १-२ महीने के सतत अभ्यास से अपने को संस्कृत बोलने में समर्थ एवं निर्भय बना डालें और संस्कृत में व्याख्यान देने का भी अभ्यास कर उसमें सफलता एवं ख्याति प्राप्त करें।

५.—संस्कृत में मनोरञ्जक कार्यक्रमों का आयोजन

प्राइमरी स्कूल से लेकर कालेज तक के संस्कृताध्यापकों तथा संस्कृत के विद्यार्थियों को चाहिए कि वे अपने विद्यालय में समय २ पर अपनी शक्ति

एवं साधनों के अनुसार प्राचीन, नवीन, देहाती तथा सिनेमा आदि समस्त तर्जों के संस्कृत गीतों के गायन, छोटे-बड़े नाटकों के अभिनय, प्रहसन, कविदरबार, सुभाषित पाठ, अन्त्याक्षरी, सुस्वर श्लोकपाठ तथा सन्ध्या-विनोद आदि मनोरञ्जक कार्यक्रमों का आयोजन किया करें।

इस सम्बन्ध में कार्यालय द्वारा जो पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं उनकी नामावली निम्नलिखित है। इन पुस्तकों की दो-दो प्रतियाँ समस्त हिन्दी-अंग्रेजी विद्यालयों में रहनी चाहिए जिससे अध्यापक एवं विद्यार्थी सुगमता से उपर्युक्त कार्यक्रमों का आयोजन कर सकें।

१—संस्कृत गान माला [विविध तर्जों के अनेक मनोहर संस्कृत गाने] ०—५०

२—संस्कृत गीत माला [महिलोपयोगी संस्कृत गीत] ०—२५

३—कौत्सस्य गुरुदक्षिणा [चार दृश्यों का एक संस्कृत एकाङ्की नाटक] ०—२५

४— भोजराज्ये संस्कृतसाम्राज्यम् [पाँच दृश्यों का एकाङ्की नाटक] ०—५०

५—बालनाटकम् [छोटे-छोटे नौ नाटक] ०—५०

६—स्वर्गीय संस्कृत कविसम्मेलनम् (२४ संस्कृत कवियों का कविदरबार) १—००

७—संस्कृत प्रहसनम् (संस्कृत के बीस प्रहसन) ०—७५

८—संस्कृत अन्त्याक्षरी (बालकों के लिये एक-एक पंक्ति तथा पूरे श्लोकों की सूक्तियों का संग्रह) २—००

९—हास्यविनोदवाटिका २—२५

१०-बाल विनोदमाला १—००

११-ललितमङ्गलम् (ललित एवं गेय पद्यों का संग्रह) १—००

६. विद्यार्थियों को संस्कृत-प्रतियोगिताओं के लिये उत्तम रूप से तैयार करना

आज कल ऐसे अनेक संस्कृत-सम्मेलन तथा विद्यालयों के वार्षिकोत्सव होते हैं जिनमें हिन्दी-अंग्रेजी के समान संस्कृत में भी व्याख्यान, वाद-विवाद,

अन्त्याक्षरी, संगीत, कवितापाठ आदि विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। परन्तु संस्कृत-अध्यापकों की शिथिलता, उपेक्षा तथा व्याख्यान आदि सिखाने तथा लिखाने की क्षमता न होने के कारण बहुत कम विद्यालयों से विद्यार्थी प्रतियोगिताओं में सम्मिलित होते देखे जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि संस्कृत की प्रतियोगिताओं का प्रदर्शन बहुत ही नगण्य एवं उपहासास्पद हो जाता है।

इन दोषों को दूर करने के लिए प्राइमरी स्कूल से लेकर कालेज तक के समस्त संस्कृताध्यापकों को चाहिए कि वे अपने २ कुछ विद्यार्थियों को उक्त सभी प्रतियोगिताओं में भाग लेने योग्य बनाकर सदा तैयार रखा करें और उन्हें अवसर आने पर सभा-सम्मेलनों में भेजा करें। अपनी अयोग्यता, शिथिलता तथा उपेक्षा के कारण विद्यार्थियों को ऐसे आयोजनों में भाग लेने से वञ्चित रखना विद्यार्थियों के हित तथा संस्कृत-प्रचार की दृष्टि से सर्वथा अशोभनीय है।

७. संस्कृतपरिषद् की स्थापना

प्रत्येक विद्यालय तथा महाविद्यालय में एक संस्कृत परिषद् की स्थापना होनी चाहिए जिसके माध्यम से संस्कृत में व्याख्यान, निबन्धपाठ, कवितापाठ तथा वादविवाद आदि के द्वारा संस्कृत भाषा एवं साहित्य की समय-समय पर चर्चा होती रहे। इसके अतिरिक्त इस परिषद् के निम्नलिखित कर्तव्य होंगे—

१—समय-समय पर बाहर से विद्वानों को आमन्त्रित कर संस्कृत-विषयक भाषण कराना,

२—नगर में किसी विशिष्ट विद्वान् या नेता के आ जाने पर उन्हें परिषद् की ओर से आमन्त्रित कर उनसे भाषण दिलाना,

३—संस्कृत के विख्यात साहित्यकारों की जयन्ती मनाना,

४—संस्कृत में भाषण, लेख, कवितापाठ, अन्त्याक्षरी तथा वाद-विवाद सम्बन्धी प्रतियोगिताओं का आयोजन करना।

५—गीत, नाटक, प्रहसन, वार्तालाप, कवि दरबार एवं सुस्वर श्लोकपाठ आदि मनोरंजक कार्यक्रमों का स्थान-स्थान पर आयोजन करना,

६—समारोहपूर्वक प्रतिवर्ष परिषद् का वार्षिकोत्सव मनाना, तथा —

७—इस पुस्तक में उल्लिखित समस्त कार्यक्रमों तथा योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिये प्रयत्न करना।

८. अध्यापकों तथा आचार्यों का संस्कृतशिक्षण

हिन्दी-अंग्रेजी विद्यालयों के संस्कृताध्यापकों को चाहिये कि वे अपने विद्यालय के अध्यापकों तथा प्रधानाचार्य महोदयों को भी देववाणी की सेवा तथा प्रचार की दृष्टि से यथासम्भव संस्कृत की शिक्षा देने का प्रयत्न करें।

हिन्दी अंग्रेजी के अध्यापकों तथा विशेषकर प्रधानाध्यापकों एवं आचार्यों को चाहिये कि वे स्वयं भी संस्कृत का समुचित ज्ञान प्राप्त करने के लिये सचेष्ट हों। किसी भी भारतीय शिक्षणालय के अध्यक्ष का संस्कृत के ज्ञान से सर्वथा हीन रहना एक अशोभनीय तथा लज्जास्पद बात है। विशेषकर आजकल जब सभी प्रिन्सिपल प्राचार्य कहे जाने लगे हैं तो उनके लिये संस्कृत का ज्ञान और भी आवश्यक हो जाता है।

हिन्दी-अंग्रेजी के विद्वानों को सरलता पूर्वक संस्कृत सिखाने के लिये कार्यालय द्वारा अनेक उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं जिनकी नामावली निम्नलिखित है। संस्कृत के अध्यापकों से सादर अनुरोध है कि वे इन पुस्तकों की सहायता से अपने विद्यालय के अध्यापकों को संस्कृत सिखाने की अवश्य चेष्टा करें। एक बार इन पुस्तकों के पढ़ने की विधि समझ लेने पर विज्ञ अध्यापक गण स्वयं भी संस्कृत सीख लेने में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। पुस्तकें निम्नलिखित हैं—

१—सुगम शब्द रूपावलि (अपने ढंग की सर्वथा नूतन पुस्तक) १–००

२—सुगम धातु रूपावलि (अपने ढंग की सर्वथा नूतन पुस्तक) १–५०

३—संस्कृत वाक्य संग्रह (द्वि. भा.), (समस्त कारकों लकारों तथा कृदन्त आदि के प्रभूत उदाहरण। १–००

४—बाल निबन्ध माला (अत्यन्त सरल ललित भाषा में संस्कृत के निबन्ध)। २–५०

५—संस्कृत निबन्धादर्श (उच्च कक्षा के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी। पत्रलेखन तथा भाषण की शिक्षा के लिये भी उपयोगी)। ४–००

६—सरल संस्कृत पद्य संग्रह (सरल पद्यों का व्याकरणानुसार संग्रह) ३—००

७—सरल संस्कृत गद्यसंग्रह (सरल गद्यों का व्याकारणानुसार संग्रह) २—७५

८—हिन्दी संस्कृत शब्दकोश (अकरादि क्रम से समस्त व्यवहारोपयोगी हिन्दी के संस्कृत प्रतिशब्द)। २—५०

६—धातुरूप गीतावलि (तिङन्त एवं कृदन्त रूपों का गीतमय संग्रह) ४—००

इन पुस्तकों के अध्ययन से विद्यार्थी भी अपनी पर्याप्त योग्यता बढ़ा सकते हैं। इन पुस्तकों की एक-एक प्रति प्रत्येक विद्यालय में अनिवार्य रूप से रहनी चाहिए।

६. संस्कृतभवन का आयोजन

प्रत्येक हिन्दी-अंग्रेजी विद्यालय में एक ऐसा कक्ष नियत करना चाहिये जिसे "संस्कृतभवन" कहा जाय। यह भवन संस्कृत की सूक्तियों, संस्कृत-संबंधी देशी-विदेशी विद्वानों के महत्त्वपूर्ण विचारों, संस्कृत साहित्य सम्बन्धी सूचनाओं तथा संस्कृत के विख्यात विद्वानों के चित्रों से सुसज्जित रहे। इस भवन में आने पर यथासंभव सबको संस्कृत में हा वार्तालाप आदि करना चाहिये।

सूक्तियों तथा संस्कृत सम्बन्धी विचारों के लिए कार्यालय द्वारा प्रकाशित निम्नलिखित पुस्तकों से सहायता लेनी चाहिये—

१—कार्यालयद्वारा प्रकाशित अनेक पोस्टर १—००

२—संस्कृत की सूक्तियाँ १—००

३—संस्कृत शिक्षा के सम्बन्ध में देश के मूर्धन्य मनीषियों के विचार २—००

४—संस्कृत गौरवगानम् १—००

१०. संस्कृत की पत्र-पत्रिकाओं का संग्रह

हिन्दी-अंग्रेजी के प्रत्येक विद्यालय तथा महाविद्यालय में प्रायः एक छोटा या बड़ा पुस्तकालय होता है तथा कहीं-कहीं वाचनालय का भी प्रबन्ध होता है जहाँ हिन्दी एवं अंग्रेजी की अनेक पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं। चूँकि इन विद्यालयों में संस्कृत की भी शिक्षा दी जाती है अतः इन पुस्तकालयों में संस्कृत

की पत्र-पत्रिकाओं के भी मँगाने का प्रबन्ध होना चाहिये। नीचे कुछ पत्र-पत्रिकाओं की सूची दी जा रही है। इनमें से २-३ पत्रिकाएँ प्रत्येक विद्यालय में अवश्य मँगायी जानी चाहिये।



दैनिक	वार्षिक मूल्य
सुधर्मा—561 रामचन्द्र अग्रहारम्, मैसूर कर्नाटक।	३६.००

साप्ताहिक

गाण्डीवम्—सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी-२।	१५.००
संस्कृतभवितव्यम्—संस्कृतभवन, २ वेस्ट हाईकोर्ट रोड, (महाराष्ट्र) नागपुर-४०००७	१५.००

मासिक

सूर्योदयः—भारतधर्ममहामण्डल, लहुरावीर, वाराणसी-१।	१०.००
भारतोदयः - गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर, (हरिद्वार)	८.००
संस्कृतप्रचारकम्—२५१८ चूड़ीवालान, दिल्ली-६	१०.००
दिव्यज्योतिः—भारतीविहार, मशोवरा, शिमला-७ (हि० प्र०)	१५.००
सस्कृतश्रीः—Sanskrit Education Society, Single Mellstreet, Tiruchirapalli-2।	६.००
प्रणवपारिजातः—श्री सीताराम वैदिक महाविद्यालय, ७/३ पो० डब्ल्यू० डी० रोड, कलकत्ता-३५	५.००
शारदा—शारदापीठ प्रदीप इण्डोलोजिकल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, द्वारका।	२०.००
भारती—भारतीभवन, गोपाल जी का रास्ता जयपुर, राजस्थान।	
बालसंस्कृतम् - आगरा रोड, घाटकोपर, बम्बई-७७।	

त्रैमासिक

सारस्वती सुषमा-सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी-२।	१०.००
सागरिका—सागर विश्वविद्यालय, सागर (म० प्र०)।	१२.००
अजस्रा—अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य परिषद्, महात्मागान्धी मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ।	१०.००

परमार्थसुधा—सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय डी० ३८/११०, हौजकटोरा, वाराणसी। १०.००
संगमनी संस्कृत साहित्य परिषद्, दारागंज, प्रयाग। १०.००
गुञ्जारवः—कालेश्वर मन्दिर, घुमेरगली, अहमदनगर (महाराष्ट्र)। ५.००
संस्कृत सम्मेलनम्—मुरारका संस्कृत महाविद्यालय, चौक, वाराणसी। ४.००
उत्कलोदयः—संस्कृत प्रचार परिषद्, वेदव्यास, राउरकेला-४, उत्कल। ६.००
संविद्—भारतीय विद्याभवन, चौपाटी, बम्बई— ८.००

षाण्मासिक

संस्कृत प्रतिभा—साहित्य अकादमी, रवीन्द्रभवन, नई दिल्ली। १०.००
प्राच्यभारती—असमसंस्कृत-समिति, गुवाहाटी, काहिलीपारा। ५.००
भास्वती—संस्कृत विभाग, काशीविद्यापीठ, वाराणसी।



११. विद्यालय की पत्रिका मे संस्कृतलेख

आजकल अनेक महाविद्यालयों से एक-एक वार्षिक पत्रिकाएँ निकल रही हैं पर उनमें संस्कृत की कविताएँ तथा लेख आदि का प्रकाशन बहुत ही कम होता है। किसी-किसी पत्रिका में तो कभी-कभी संस्कृत की एक पंक्ति भी देखने को नहीं मिलती। इसके दो ही कारण हो सकते हैं। एक तो यह कि उस पत्रिका के सम्पादकों को संस्कृत से प्रेम न हो अथवा दूसरा यह कि उस विद्यालय के अध्यापक तथा विद्यार्थी संस्कृत में कुछ लिख न सकते हों। पर यह दोनों ही बातें सर्वथा अशोभनीय तथा अवाञ्छनीय हैं। अतः महाविद्यालयों से निकलनेवाली प्रत्येक पत्रिका के सम्पादक-मण्डल को चाहिये कि वह पत्रिका में संस्कृत के लिये भी समुचित स्थान दे। कुछ कविताएँ, लेख तथा कुछ सुभाषितपद्यों का प्रत्येक पत्रिका में प्रकाशन किया जाना चाहिये। कविता तथा लेख सन्धि-समास की जटिलता से रहित तथा अत्यन्त सरल एवं सरस भाषा में लिखित होना चाहिए। संस्कृत के वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, दर्शन ग्रन्थ तथा काव्य-नाटकों के भी ज्ञानवर्द्धक, मनोरञ्जक तथा उपदेशप्रद सन्दर्भों का अनुवाद के साथ प्रकाशन करना चाहिये। इससे संस्कृतप्रेमी विद्यार्थियों तथा पाठकों का अधिक लाभ हो सकता है और संस्कृत का प्रचार भी।

१२. पत्र-पत्रिकाओं में संस्कृतसम्बन्धी लेखों का प्रकाशन

संस्कृत प्रचार की दृष्टि से यह नितान्त आवश्यक है कि अंग्रेजी, हिन्दी तथा अन्य सभी भारतीय भाषाओं की पत्र-पत्रिकाओं में संस्कृतसम्बन्धी लेख बराबर प्रकाशित होते रहें। यह काम संस्कृत-विद्यालयों के पण्डितों की अपेक्षा अंग्रेजी स्कूल-कालेजों के संस्कृताध्यापक, यदि परिश्रम करें तो, अधिक उत्तम रीति से कर सकते हैं। पत्र-पत्रिकाओं के अधिकांश सम्पादक भी आचार्यों की अपेक्षा एम० ए० आदि उपाधिधारियों के ही लेख प्रकाशित करने में अधिक रुचि रखते हैं। अतः स्कूल-कालेजों के संस्कृत के अध्यापकों तथा प्राध्यापकों को चाहिये कि वे अपने प्रदेश की प्रचलित पत्र-पत्रिकाओं में कभी-कभी संस्कृतसम्बन्धी लेख अवश्य प्रकाशित किया करें। इससे संस्कृत प्रचार के साथ उनका यश भी होगा और उत्तम लेख होने पर अर्थलाभ भी हो सकता है। लेखों के विषय इस प्रकार हों—

१—संस्कृत भाषा का महत्त्व।

२—संस्कृत साहित्य का महत्त्व।

३—संस्कृत-अध्ययन की उपयोगिता।

४—संस्कृत शिक्षण की सरल विधियाँ।

५—संस्कृत साहित्य में प्रतिपादित जीवनदर्शन और उसकी महत्ता।

६—संस्कृत-सम्बन्धी भ्रम और उनका निराकरण।

७—संस्कृत साहित्य के सन्देश।

८—व्यक्ति, समाज, राष्ट्र तथा विश्व के उन्नयन में संस्कृत के प्रचार से सहायताप्राप्ति सम्भव। आदि आदि।

१३. संस्कृतपाठशालाओं की स्थापना

अपने यहाँ ऐसे अनेक ग्राम तथा नगर हैं जहाँ हिन्दी अंग्रेजी के विद्यालय तथा महाविद्यालय तो कई चल रहे हैं पर वहाँ संस्कृत पाठशाला का कोई नाम भी नहीं है। यदि वहाँ पहले कोई संस्कृत की पाठशाला थी भी तो

अब नहीं है । 'ऐसे स्थानों पर वहाँ के हिन्दी-अंग्रेजी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों तथा महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों को चाहिये कि वे वहाँ एक संस्कृत पाटशाला की भी स्थापना तथा सञ्चालन करें । इन विद्यालयों तथा महाविद्यालयों के प्रधानाध्यापकों एवं प्रधानाचार्यों में कुछ ऐसे कर्मवीर तथा प्रभावशाली व्यक्ति हैं जो कम से कम प्रथमा-मध्यमा तक की एक पाठशाला का सञ्चालन अत्यन्त सुचारु रूप से कर सकते हैं ! ऐसा करने से एक तो उन्हें एक पाठशाला चलाने तथा उसके द्वारा भारतीय साहित्य तथा संस्कृति की रक्षा करने का गौरव प्राप्त होगा और दूसरे उनके विद्यार्थियों को संस्कृत की विशेष योग्यता प्राप्त करने का भी सुअवसर मिलेगा । इन विद्यालयों को सरकारी सहायता भी अविलम्ब ही प्राप्त हो सकती है ।

हम अपने माननीय प्रधानाध्यापकों तथा प्रधानाचार्यों का इस ओर विशेष रूप से ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं ।

१४. प्रथमा आदि परीक्षा दिलाने की व्यवस्था

हिन्दी—अंग्रेजीके विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में जो विद्यार्थी संस्कृत पढ़ते हैं उनमें संयोगवश २–४ विद्यार्थी ऐसे भी मिलते हैं जो परिश्रम से पढ़ते हैं और संस्कृत में विशेष योग्यता प्राप्त करना चाहते हैं । ऐसे विद्यार्थियों से यदि संस्कृत की प्रथमा मध्यमा आदि परीक्षाओं के दिलाने का प्रयत्न किया जाय तो इन विद्यालयों से भी कुछ संस्कृत की रक्षा तथा प्रचार में पर्याप्त सहायता मिल सकती है । संस्कृत परीक्षाओं के वर्तमान परिवर्तित पाठ्यक्रम के अनुसार हिन्दी-अंग्रेजी के विद्यार्थियों के लिये इन परीक्षाओं का दे देना और भी सरल हो गया है क्योंकि इन परीक्षाओं में लगभग आधे विषय तो वे ही रखे गये हैं जिन्हें ये विद्यार्थी अपने विद्यालयों में ही पढ़ लेते हैं । इसी कारण इधर हिन्दी-अंग्रेजी के अनेक विद्यार्थी संस्कृत परीक्षाओं में सम्मिलित होते दिखाई दे रहे हैं ।

अतः हिन्दी-अंग्रेजी विद्यालयों के संस्कृताध्यापकों को चाहिये कि वे अपने विद्यार्थियों को प्रथमा आदि परीक्षा देने के लिये प्रोत्साहित करें और अतिरिक्त समय में उन्हें इन परीक्षाओं के पाठ्य ग्रन्थों के पढ़ाने की व्यवस्था करने की कृपा करें । यदि समीप में कोई संस्कृत पाठशाला चलती हो तो उसके अध्यापकों से भी सहायता ली जा सकती है । जिन नगरों में हिन्दी

अंग्रेजी के अनेक विद्यालय तथा संस्कृत पाठशालाएँ भी चलती हैं वहाँ यदि संस्कृत पाठशालाओं की ओर से सायंकाल १-२ घण्टे तक हिन्दी अंग्रेजी विद्यालयों के विद्यार्थियों को संस्कृत पढ़ाने की व्यवस्था की जाय तो उन्हें बहुत सुविधा हो सकती है और इससे संस्कृत पाठशालाओं को भी लाभ और सुयश हो सकता है। हिन्दी-अंग्रेजी विद्यालयों के अध्यापकों को चाहिये कि वे अपने समीपवर्ती संस्कृत पाठशालाओं के अध्यापकों को इस प्रकार की व्यवस्था चलाने के लिये प्रेरित करें तथा उन्हें सहयोग दें।

१५. संस्कृति तथा सदाचार से प्रेम

संस्कृत साहित्य के विभिन्न ग्रन्थों में वर्णित शिक्षा सम्बन्धी आदर्शों के अनुसार किसी भी विद्या के पढने का मुख्य लक्ष्य आजकल के अनुसार केवल परीक्षा पास करना, उपाधि प्राप्त करना तथा धन कमाना नहीं प्रत्युत सदाचारी जीवन बिताना भी है। संस्कृत-संस्कृति के अनुसार शिक्षा का पहला लक्ष्य मनुष्य बनना और इसके बाद ही और सब कुछ है। अतः संस्कृत भाषा एवं साहित्य से वास्तविक प्रेम रखनेवाले अध्यापकों तथा विद्यार्थियों को चाहिए कि वे संस्कृत अध्ययन के साथ अपनी संस्कृति से प्रेम रखना तथा सदाचार का पालन करना भी अपना मुख्य कर्त्तव्य समझें। संस्कृत भाषा एवं साहित्य के प्रति श्रद्धा रखनेवाले किसी भी अध्यापक तथा विद्यार्थी को कोई ऐसा आचरण नहीं करना चाहिये जो इस पवित्र भाषा के आदर्शों के विरुद्ध हो। सबको यथासम्भव अधिक से अधिक शिष्ट, संयत तथा अनुशासित जीवन व्यतीत करना चाहिये। संस्कृत शिक्षा का यही सबसे बड़ा आदर्श है और मानव समाज के लिये यही इस भाषा की सबसे बड़ी देन है।

भारतीय धर्म, सदाचार एवं सभ्यता-संस्कृति के ज्ञान के लिये कार्यालय द्वारा प्रकाशित निम्नलिखित पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिये। इन पुस्तकों की एक-एक प्रति प्रत्येक विद्यालय के संस्कृत विभाग में रहनी चाहिये।

१--भारतीय आचार-व्यवहार (अपने विषय की सर्वोत्तम पुस्तक) १५-००

२—नीति-शिक्षा १-००

३—एकचारिणी चर्या (महिलोपयोगी)





संस्कृतपाठशालाओं तथा स्कूल-कालेजों के नववयस्क संस्कृताध्यापकों को एक लाभप्रद सूचना

यह तथ्य स्वीकार करने में कोई हानि या अपमान नहीं कि इस समय संस्कृत पाठशालाओं तथा स्कूल-कालेजों में जो संस्कृत के नवनियुक्त शिक्षक, अध्यापक या प्राध्यापक हैं उनमें से जहाँ अनेक व्यक्ति संस्कृत में पढ़ाने, लिखाने, बोलने तथा भाषण करने में बहुत ही कुशल हैं वहीं बहुत से व्यक्ति ऐसे भी हैं जो उचित शिक्षा न मिलने के कारण अथवा अपने ही आलस्य अथवा उपेक्षा आदि दोषों के कारण उक्त सभी विषयों में अयोग्य रह गये हैं और चाहते हुए भी अपनी इस कमी को स्वयं दूर नहीं कर पाते हैं।

इस स्थिति को देखते हुए हमने यह निश्चय किया है कि ऐसे अध्यापकों में से जो अध्यापक संकोच छोड़कर अपनी इस कमी को दूर करना चाहें उन्हें उनकी आवश्यकता के अनुसार इस कार्यालय में कुछ दिनों रखकर उनकी कमी को दूर करने में उनकी सहायता की जाय तथा कार्यालय में संगृहीत संस्कृत शिक्षण सम्बन्धी विपुल एवं विविध-सामग्री से उन्हें स्वयं भी लाभ उठाने का अवसर प्रदान किया जाय।

इस योजना में भाग लेने वालों के लिये आर्थिक सहयोग करना कार्यालय के लिये संभव न होगा। अतः वाराणसी में आने-जाने तथा भोजन आदि का व्यय अध्यापकों को स्वयं वहन करना पड़ेगा। यहाँ केवल निवास की सुविधा शिक्षा निःशुल्क दी जायगी।

जो अध्यापक इस योजना से लाभ उठाना चाहें वे इस सम्बन्ध में पत्रव्यवहार कर यहाँ कुछ दिनों तक अवश्य रहने के लिए समय निकालें तथा अपनी कमी को सर्वथा दूर कर डालें यह साग्रह अनुरोध है।

निवेदक—
वासुदेव द्विवेदी शास्त्री
(संचालक)

संस्कृत भाषा, संस्कृत साहित्य तथा भारतीय संस्कृति-सभ्यता के सम्बन्ध में अध्ययन करने योग्य कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

संस्कृत का अध्ययन, डॉ० राजेन्द्रप्रसाद २)
भारत में संस्कृत की अनिवार्यता क्यों ? डॉ० वागीश शास्त्री ५)
संस्कृत साहित्य का इतिहास, पं० बलदेव उपाध्याय ६)
वैदिक साहित्य और संस्कृत ,, ,, ११॥)
संस्कृत वाङ्मय ,, ,, ११)
भारतीय दर्शन ,, ,, ८)
आर्य संस्कृति ,, ,, ५)
Sanskrit (Essays on the value of the language and literature) ६)
Sanskrit literature ,, (Dr. Raghavan) ११॥)
संस्कृत शास्त्रों का इतिहास ,, ,, १६)
वैदिक साहित्य का इतिहास, पं० रामगोविन्द त्रिवेदी ७)
संस्कृत कवि दर्शन, डॉ० भोलाशंकर व्यास ६)
संस्कृत वाङ्मय के अमर रत्न, जयचन्द्र विद्यालंकार १)
वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा, डॉ० सत्यप्रकाश ८)
भारतीय संस्कृति, प्रो० शिवदत्त ज्ञानी ५)
भारतीय संस्कृति, साने गुरु जी ३॥)
हिन्दुओं का जीवन दर्शन, डॉ० राधाकृष्णन १॥
पुरुषार्थ डॉ० भगवानदास ६)
भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी, डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी ६)
रामराज्य और साम्यवाद, स्वामी करपात्री जी ४)
Indian inheritence, vol. i. ११)
Sanskrit culture in a changing world. २१)
Indian literature abroad. ७)
Sanskrit in Indonesia. ३०)
Hindu Glory (शास्त्रधर्म प्रचार सभा, कलकत्ता) २)

ऊपर लिखित समस्त पुस्तकों के मिलने का पता—

मोतीलाल बनारसीदास तथा चौखंभा आदि

वाराणसी के प्रमुख पुस्तक विक्रेता ।

कल्पना प्रेस, रामकटोरा रोड, वाराणसी ।

